सच्ची शिवरात्रि कैसे मनायें
वर्तमान समय शिवरात्रि का समय है, विकार विष को छोड़कर शिव पिता से प्रीति जोड़ो
बेहद के निराकार बाप परमात्मा। शिव से स्वर्ग का वर्सा लो
शिव को याद करो तो पाप मिट जायेंगे व पावन देवता बनोगे।
ज्ञान कलश से ही स्वर्ग के द्वार मिलते हैं
बुद्धि रूपी कलश
और सभी को जीवनमुक्ति प्रदान होती है।
बर्तमान समय ही रात्रि है।
हमें आत्मा का जागरण करना चाहिए, ब्रह्मचर्य व्रत के साथ शुभ व श्रेष्ठ वृत्ति धारण करने का व्रत लेना चाहिए। शिव के प्रति ज्ञान का बिन्दु-बिन्दु निरंतर प्रवाहित करते रहना चाहिए। शिवरात्रि मनाने की इसी सच्ची रीति को अपनाकर हमें अवढरदानी शिवबाबा से इसी जन्म में मुक्ति व जीवनमुक्ति के सर्वश्रेष्ठ वरदान ले लेने है
बलि चढ़ना याने मन, बुद्धि और सम्बन्ध से समर्पित
आक, धतूरा चढ़ाना याने विषयों, विकारों को चढ़ाना
धतूरा
बेलपत्र
तन
मन
धन
ज्ञान गंगा जिससे आत्मा पावन बनती है
ज्ञान ही वह सोम रस है जिसके द्वारा आत्मा को शीतलता तथा शांति उपलब्ध होती है।
ज्ञान नेत्र
त्रिशूल अर्थात स्व, बाप व ड्रामा की स्मृति तीनों ताप मिटाने वाले
ज्ञान डमरू द्वारा दिव्यता, आध्यात्मिकता
शंकर समान योगमूर्त तपस्वी बनो
विकार रूपी सर्प को अधीन किया
काम क्रोध वश कर एकरस आसन में स्थित
आत्मदर्शन रूपी चक्र
शंख रूपी मुख द्वारा ज्ञान युक्त मधुर बोल
ज्ञान गदा द्वारा बुराई समाप्त करना
कमल की भांति निर्लिप्त
विष्णु समान दैवीगुण धारण करो
शंकर र
विष्णु च
ब्रह्मा ना
परमपिता परमात्मा, ज्योतिबिन्दु शिव
रचयिता
ब्रह्मा द्वारा गीता ज्ञान व राजयोग सीखाकर पतित मनुष्य से पावन देवता बनाता हूँ
लिंग → ल अर्थात् लय (विनाश) और ग अर्थात् गमन (नई रचना), शिव यह दोनों कार्य कराने वाले हैं इसलिए ज्योतिर्लिंग कहा है, शिवलिंग शिव की प्रतिमा है न कि ब्रह्माण्ड की
शिव ने बद्ध आत्माओं रूपी पशुओं को माया के पाशों से मुक्त किया इसलिए उनका नाम पशुपतिनाथ अथवा मुक्तेश्वर हुआ, मनुष्यों के दुःखों को हरा इसलिए हर अथवा दुःखहर्ता कहलाये
आदिदेव
पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा
अकाल तख्त अथवा भागीरथ जिनके शरीर रूपी रथ द्वारा शिव ने गीता ज्ञान गंगा प्रवाहित की